JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय समाज में अन्तरपीढ़ी संघर्ष एवं परिवर्त्तनों के कारण

KAYNAT FATMA
Research Scholar
Lalit Narayan Mithila University
Kameshwaranagar, Darbhanga,
Bihar, 846004

सार :

पिछले दशक में, मध्यम ग्रामीण वर्ग के भारतीय परिवारों में अनेक बदलावों का एक सिलसिला शुरू हुआ है। वैश्वीकरण और बदलते सामाजिक परिवेश की बढती माँगों के कारण भारत में उभरती वयस्क पीढ़ी अनेक तरह की कठिन चुनौतियों का सामना कर रही है।इसके कारण वयस्क अवस्था में संक्रमण के दौर से गुज़रने के अनुभवों में आमूल–चूल परिवर्तन आ गया है। विभिन्न संस्कृतियों में वयस्क अवस्था का सबसे बड़ा मानदंड तो यही है कि वयस्क होते–होते ये युवा स्वतंत्र निर्णय लेने लगे हैं और जीवन के इस दौर में व्यक्तिगत स्तर पर अपनी पसंद के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण फैसले करने लगे हैं। इस तरह के फैसलों का स्थायी प्रभाव आर्थिक कामयाबी, सुखों और अंततः उम्र बढ़ने के साथ–साथ अच्छी तरह से सफल जीवन जीने के रूप में उनके भावी जीवन पर पड़ने लगा है। अपनी पसंद के कारण किये गए फैसलों में अक्सर अनेक प्रकार के कारक जुड़े रहते हैं। खास तौर पर भारत के संदर्भ में पारिवारिक दायित्व और समाज की अपेक्षाएँ उनके जीवन पर अधिक हावी रहती हैं, क्योंकि यहाँ उभरती वयस्क अवस्था में भी ये युवा सामान्यतः स्वतंत्र निर्णय नहीं लेते।इस पत्र के माध्यम से भारतीय समाज में अन्तरपीढ़ी संघर्ष एवं परिवर्त्तनों के कारणों पर विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य–शब्दः *अन्तरपीढ़ी संघर्ष; वयस्क पीढ़ी; परिवर्त्तन; कारण; बदलते परिदृश्य।*

परिचय

भारतीय समाज की आज एक प्रमुख समस्या अंतरपीढ़ी संघर्ष के रूप में देखी जा सकती है। यदि तुलनात्मक रूप से विवेचन किया जाय तो एक पीढ़ी या समान पीढ़ी के लोगों के बीच वैचारिक व व्यावहारिक भिन्नता उतने अधिक नहीं होते, जितने कि दो भिन्न – भिन्न पीढ़ियों के बीच पाया जाता है।जब एक पीढ़ी द्वारा दबाव, विरोध व धमकी आदि के द्वारा दूसरी पीढ़ी को दबाने का प्रयास किया जाता है, तो ऐसी सििति को ही अन्तरपीढ़ी संघर्ष के नाम से जाना जाता है।[1] उदाहरणस्वरूप – विभिन्न दशाओं के कारण युवा और प्रौढ़ या वृद्ध पीढ़ी के बीच संघर्ष का होना। यह संघर्ष व्यवहार के परम्परागत तरीकों के प्रति उदासीनता, विरोध व विद्रोह आदि का होता है। नये मूल्यों की प्रतिस्थापना व पुराने मूल्यों को नकारना अन्तरपीढ़ी संघर्ष का आधार है।

भारतीय समाज में अन्तरपीढ़ी संघर्ष की समस्या आधुनिक समाज की देन है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्वतंत्रता व समानता के भाव विकसित हुए, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण व लौकिककरण के प्रभाव में नयी संस्कृति का आगमन हुआ।[2] फलस्वरूप युवा पीढ़ी ने समाज के प्रथागत नियमों व व्यवहार के ढंगों का विरोध करना प्रारंभ किया, जो लंबे समय से भारतीय जीवन का अंग बना हुआ था। पुरानी पीढ़ी परम्परागत व प्रथागत नियमों को महत्वपूर्ण मानकर उसके अनुसार चलने के पक्षधर रहे। फलस्वरूप पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के बीच संघर्ष की दशा उत्पन्न हो गई है। अन्तरपीढ़ी संघर्ष की यह समस्या जीवन के हर क्षेत्र मे देखी जा सकती है।[3] उदाहरणस्वरूप – पुरानी पीढ़ी अपनी जाति में विवाह के पक्षधर है तो युवा पीढ़ी अन्तर्जातीय

विवाह की ओर बढ़ रहे हैं, पुरानी पीढ़ी बेटा – बेटी में अन्तर को प्रदर्शित करते हैं, तो युवा पीढ़ी में लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं मानते हैं, आदि – आदि।

यहां पर एक बात उल्लेखनीय है कि संघर्ष में हिंसा या धमकी के भाव समाहित होते हैं जबकि अन्तरपीढ़ी संघर्ष में हिंसा का समावेश नहीं होता। यह संघर्ष प्रथागत व परम्परागत व्यवहार के प्रति विरोध की दशा को प्रदर्शित करता है तथा नये मूल्यों व व्यवहारों को अपनाने पर जोर देता है।[4]

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आलोक में यह कहा जा सकता है –

(अ) अन्तर – पीढ़ी संघर्ष पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के बीच उत्पन्न 'तनाव की स्थिति' है।

(ब) अन्तर – पीढ़ी संघर्ष संक्रमणकालीन समाज की विशेषता है। जब विभिन्न कारणों से पुराने मूल्य उपयोगी नहीं प्रतीत होते तथा नये मूल्यों को सामाजिक मान्यता नहीं मिलती, तब यह स्थिति बनती है।

(स) अन्तर – पीढ़ी संघर्ष परम्परागत व्यवहार के प्रति उदासीनता व नवीन व्यवहार के प्रति लगाव का परिणाम है।

(द) अन्तर – पीढ़ी संघर्ष की दशा स्थायी नहीं होती है।

उत्तर साम्राज्यवादी यूरोप –केंद्रित संस्कृति के कारण इस बदलते भूदृश्य के बीच भारतीय युवा अपने लिए नई सोच को परिभाषित करने के साथ–साथ अपनी पहचान और अस्मिता को भी तलाश रहे हैं। भारत में एकल परिवारों की तादाद बढ़ने के कारण परिवारों की विचारधारा में भी अंतर आने लगा है और वयस्क युवाओं की उभरती पीढ़ी के निर्णय लेने की प्रक्रिया में माँ–बाप और बच्चों के रिश्तों के बीच अधिक दूरियाँ बढ़ने लगी हैं।[5] यह वृद्धावस्था की रूढ़ियों से उत्पन्न जड़ता और परिवर्तन के अनेक दबावों के बीच की अन्योन्य क्रिया को चित्रित करता है। इन सामाजिक–सांस्कृतिक माँगों को पूरा करने के उद्देश्य से सुचारू रूप से जीवन–यात्रा को चलाने के लिए लागत और लाभ के बीच संतुलन बनाने के लिए खास तरह के कौशल विकसित करने की आवश्यकता है।[6]

भारत में उभरती वयस्क अवस्था के युवा, ज़िंदगी के इस दौर में परिवार से अलग होकर स्वतंत्र और स्वायत्त होते हुए भी माँ–बाप के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को गंभीरता से समझते हैं और इन दायित्वों को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानकर उनका निर्वाह करते हैं।[7] शोध परिणामों से पता चलता है कि ये युवा अपने माँ–बाप के प्रति भारी जिम्मेदारी का वहन करते हैं और अपनी पसंद का जीवन जीते हुए भी अपने माँ–बाप की देखभाल की ज़िम्मेदारी से कतराते नहीं हैं। भारत में उभरती वयस्क पीढ़ी के युवा खुद अपनी पहचान बनाने और आत्मनिर्भर बनने को प्राथमिकता देते हैं। स्वायत्तता की ओर बढ़ते हुए भी अपनी परंपरागत भूमिका के साथ सामंजस्य बनाये रखने की यह प्रवृत्ति भारतीय लोगों के बदलते भूदृश्य को बहुत सही ढंग से निरूपित करती हैं।[8]

उसके बाद वे आर्थिक सुरक्षा, शिक्षा और कैरियर को अधिक महत्वदेने लगे हैं। ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था, बड़ी से बड़ी उन्नत डिग्रियों, वैयक्तिक आदर्शों और बेहतर भविष्य के लिए बड़े शहरों की ओर पलायन की ओर बढ़ते भारत का रुझान बहुत गंभीर और सुविचारित लगता है। रोमांटिक संबंधों की प्रवृत्ति भी काफ़ी महत्वपूर्ण समझी जाती है।[9] इससे भारतीय विवाहों में पश्चिमी और भारतीय प्रथाओं की बढ़ती मिश्रित प्रवृत्ति का पता चलता है और स्वायत्तता के कारण ही ऐसे रिश्ते बनाने में वयस्कों की अपनी मर्जी चल पाती है। सक्रिय रूप में खुले तौर पर सामाजिक परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं का अनुसरण करने की अपेक्षा वयस्क पीढ़ी के युवा माँ–बाप के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभाने, आर्थिक सुरक्षा, शिक्षा और कैरियर को अधिक महत्व देने लगे हैं।[10]शोध–परिणामों से वैश्वीकृत उत्तर–साम्राज्यवादी युग, जिसमें ये लोग रहते हैं, का स्पष्टतः संकेत मिलता है.

इस पीढ़ी के लोगों के लिए इन सब बातों का क्या मतलब है? पश्चिम की तुलना में भारत में उभरती वयस्क पीढ़ी कुछ अलग दिखाई दे सकती है और कुछ अलग किस्म की भी हो सकती है। हम यह नहीं मान सकते कि हम इन लोगों के बारे में पश्चिमी लोगों द्वारा किये गए शोध–कार्यों से जो कुछ जानते हैं, वह वैश्विक स्तर पर भी लागू होता है। लोकप्रिय मीडिया में आज की इस उभरती वयस्क पीढ़ी को जिस तरह से आलसी और लापरवाह बताया जाता है, उसके ठीक विपरीत भारत की यह सहस्राब्दी पीढ़ी न केवल अपने माँ–बाप के महत्व को समझती है, बल्कि अपने जीवन–काल में अपनी जीवन–शैली में परिवार के प्रति अपने दायित्वों के निर्वाह को भी महत्व प्रदान करती है.

अन्तर– पीढ़ी संघर्ष के कारण

अन्तर– पीढ़ी संघर्ष किसी एक कारण का परिणाम नहीं है। यह अनेक कारणों का परिणाम है। इनमें कुछ महत्त्वपूर्ण कारणों को निम्न रूप में समझा जा सकता है –

1. *पाश्चात्य संस्कृतिः* भारत में अंग्रेजी शासन – व्यवस्था के कायम हो जाने के बाद से ही हमारा सम्पर्क पश्चिमी संस्कृति से स्थापित हुआ व दिन – प्रतिदिन घनिष्ठ होता चला गया। समानता, वैयक्तिक स्वतंत्रता, व्यक्तिवादिता, भौतिकता, तार्किकता व मानवतावाद आदि पश्चिमी संस्कृति की देन है। नई पीढ़ी का इस संस्कृति से प्रभावित होने के परिणामस्वरूप उनका प्रथागत व परम्परागत व्यवहार के प्रति उदासीनता व विरोध बढ़ता है। दूसरी ओर पुरानी पीढ़ी भारतीय संस्कृति को महत्त्वपूर्ण मानकर नई पीढ़ी को उसके अनुकूल चलने की प्रेरणा देती रहती है। यहीं से अन्तर – पीढ़ी संघर्ष प्रारंभ होता है।[11]
2. *आधुनिक शिक्षाः* गुन्नार मिर्डल ने लिखा है ''शिक्षा विकास के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।'' जेम्स . एस. कौलमेन के शब्दों में, '' अतीत में शिक्षा व्यवस्था जहां रूढ़िवादिता, संस्कृति रक्षक एवं संस्कृति प्रसारक के रूप में काम आती थी, वहीं आज यह परिवर्तन पहलुओं के निर्धारक के रूप में प्रयुक्त होती है।'' आधुनिक शिक्षा तार्किम व व्यावसायिक गुणों से युक्त है जो व्यक्ति की आजीविका के नये अवसर देकर अपने आप पर निर्भरता को प्रोत्साहित करता है। इससे व्यक्ति की परिवार पर निर्भरता कम होती है। इसके चलते पुरानी पीढ़ी से संघर्ष को बल मिलता है।[12]
3. *नैतिकता के नये प्रतिमानः* नैतिकता उचित व अनुचित की धारणा पर आधारित है। पूर्व की पीढ़ी जिसे उचित समझती रही, आज की पीढ़ी उसे अनुचित मानती है। जैसे आज की पीढ़ी स्त्रियों का सार्वजनिक जीवन में प्रवेश, अपनी जाति के बाहर विवाह व नवस्थानीय परिवार की स्थापना आदि को अनुचित नहीं मानती। नयी पीढ़ी भौतिक उपलब्धियों से संबंधित मूल्यों को उचित मानती है। इस प्रकार नैतिकता के नये प्रतिमान अन्तर – पीढ़ी संघर्ष को जन्म देते हैं।
4. *सामाजिक गतिशीलताः* सामाजिक गतिशीलता आधुनिक समाजों की विशेषता है। आधुनिक समाजों में विज्ञान व प्रौद्योगिकी का महत्त्व होने के कारण व्यक्तिगत गुण, अवसर व प्रतियोगिता आदि का महत्त्व अधिक होता है। व्यक्ति अपनी सफलताओं व सुविधा के आधार पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहते हैं। इससे एक ओर पुरानी पीढ़ी की निरंकुशता कम होती है तथा दूसरी ओर नई पीढ़ी का विरोध प्रारंभ होता है। यही स्थिति अन्तर – पीढ़ी संघर्ष का कारण बनती है।[13]
5. *औद्योगीकरण व नगरीकरणः* अन्तर – पीढ़ी संघर्ष का एक प्रधान कारण औद्योगीकरण व नगरीकरण है। इन दोनों के प्रभाव में अनेक तरह के नवीन पेशों का विकास हुआ, श्रम – विभाजन का आधार व्यक्ति की योग्यता बना, धन का महत्त्व बढ़ा व आयु – भेद का महत्त्व कम होने लगा, आदि – आदि। इन परिस्थितियों ने पीढ़ीगत मान्यताओं को कमजोर किया।
6. *परिवार की संरचना में परिवर्तनः* संयुक्त परिवार भारतीय सामाजिक संरचना का आधार है। इसे भारत की परम्परा का द्योतक माना गया। ऐसे परिवार में संयुक्तता की धारणा निहित रही। यह संयुक्तता कई पीढ़ियों, निवास, रसोई, सम्पत्ति, पूजा व दायित्वों से है। आज इसके स्थान पर एकाकी परिवार का विकास देखा जा सकता है। ऐसे परिवार में व्यक्तिवादिता संयुक्तता पर हावी हो गया। संयुक्त परिवार से अलग होकर घर बसाना अच्छा माना जाने लगा। ऐसे परिवार में पति – पत्नी व अविवाहित बच्चों की प्रधानता होती है। पुरानी पीढ़ी का स्थान गौण होने से अन्तर – पीढ़ी संघर्ष को बल मिलता है।[14]

इस प्रकार अन्तर – पीढ़ी संघर्ष अनेक कारणों का परिणाम है। इन उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त सामाजीकरण के नये ढंग, दिशाहीन राजनीति चेतना व धन की महत्ता आदि ने भी अपनी भूमिका को दर्शाया है।

इस पीढ़ी के युवा अलग–अलग मोड़ पर जीवन की कठोर वास्तविकता का सामना करते हैं, जिसके लिए आवश्यक है कि वे सोच–समझकर और पूरी जानकारी के साथ निर्णय लें। जीवन के ये निर्णय भी अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ निर्णय तो उनके अपने अस्तित्व से जुड़े होते हैं और कुछ निर्णय अधिक व्यावहारिक होते हैं, जिसके लिए उन्हें बार–बार अपने मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ता है।[15] कौन–सा व्यवहार अनुकूल है या प्रतिकूल, इसका आधार तय करने के लिए सांस्कृतिक रूप से सामान्य जीवन–लक्ष्यों को स्थापित करना ज़रूरी है। हालाँकि, आज जिसे "सामान्य" या विशिष्ट समझा जाता है, हो सकता है कि वह कई महत्वपूर्ण तरीकों से पिछले दशकों में "सामान्य" माने जाने वाले व्यवहार से भिन्न हो। इसके अलावा, जिसे पश्चिमी विचारधारा में या पिछली पीढ़ी के भारतीयों द्वारा सामान्य माना जाता हो, हो सकता है वे मानदंड आज के भारत की उभरती वयस्क पीढ़ी पर लागू ही नहीं होते हों।

निष्कर्ष

अनुकूल परिणाम पाने के लिए भारत में उभरती वयस्क पीढ़ी के निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझना ज़रूरी है और यह कार्य अक्सर सर्वेक्षण के समय मात्र एक चैकमार्क लगाकर संभव नहीं होता. खास तौर पर भारत जैसे समुदाय–केंद्रित समाज के लिए हमें उस एजेंसी को पहचानना होगा जो अपने जीवन–लक्ष्यों के लिए निर्णय लेने की प्रक्रिया से संबद्ध हो। इस शोध–कार्य के नतीजों से वैश्वीकरण के वे तमाम सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव प्रकाश में आते हैं जो सांस्कृतिक मानदंडों को पुनर्गठित करते हैं। इसके कारण सफलता के आकलन के पैमाने में बदलाव भी आवश्यक हो जाता है। हालाँकि इस वर्ग के लोगों की क्षमता की पहचान अच्छी तरह से हो पाई है या नहीं, इस सवाल का जवाब अभी–भी नहीं मिल पाया है. ये वयस्क सभी संभावित भावी विकल्पों की तलाश में भी लगे रहते हैं। तथापि मीडिया में उन्हें कैसे पेश किया जाता है और उनके आदर्शों और लक्ष्यों की हकीकत क्या होती है इसके बीच कुछ विसंगति अभी–भी बनी हुई है। इसलिए मुख्य धारा के मीडिया में सही और साक्ष्य पर आधारित लक्ष्यों के निरूपण पर ज़ोर देना बेहद ज़रूरी है। यह विशेष रूप से आवश्यक है क्योंकि इस शोध–कार्य से यह बात स्पष्ट हो गई है कि भारतीय परंपराओं की ताकत को बरकरार रखते हुए भारत ने भावी विश्व में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए आज की उभरती वयस्क–पीढ़ी की क्षमता को पहचान लिया है।

संदर्भ :

1. बेल्सकी, जे., इंटरजेनेरेशनल ट्रांसमिशन ऑफ़ वार्म–सेंसिटिव–स्टिमुलेटिंग पेरेंटिंगः 3 साल के बच्चों की माताओं और पिता का एक संभावित अध्ययन, बाल विकास, 2005;76:384–396।

2. बेंगस्टन वीएल, गियारुसो आर., मैब्री जेबी, सिल्वरस्टीन एम. एकजुटता, संघर्ष, और महत्वाकांक्षाः अंतरपीढ़ी संबंधों पर पूरक या प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण, विवाह और परिवार का जर्नल, 2002; 64:568–576।

3. बेंग्टसन वी, कुयपर्स जे. पीढ़ीगत अंतर और विकासात्मक हिस्सेदारी, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजिंग एंड ह्यूमन डेवलपमेंट, 1971; 2:249–260.

4. बर्डिट के. एस., फ़िंगरमैन के. एल., ज़ारिट एस., वयस्क बच्चों की समस्याएं और सफलताएँः अंतरपीढ़ी महत्वाकांक्षा के लिए निहितार्थ, जेरोन्टोलॉजी के जर्नल, सीरीज बीः मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 2010; 65:145–153

5. ब्रुक जे, व्हिटमैन एम, झेंग एल., समस्या व्यवहार के लिए जोखिमों का अंतरजनपदीय संचरण, असामान्य बाल मनोविज्ञान का जर्नल, 2002; 30: 65–76।

6. कारस्टेंसन एलएल. मानव विकास पर समय की भावना का प्रभाव, विज्ञान, 2006; 312: 1913–1915।

7. चेन जेड, कपलान एच. बी., रचनात्मक पालन–पोषण का इंटरजेनरेशनल ट्रांसमिशन, विवाह और परिवार का जर्नल, 2001; 63: 17–31।

8. क्लार्क ई, प्रेस्टन एम, रक्सिन जे, बेंग्टसन वी. एल., बड़े माता–पिता और वयस्क बच्चों के बीच संघर्ष और तनाव के प्रकार, गेरोन्टोलॉजिस्ट, 1999; 39:261–270।

9. गियारुसो आर., फेंग डी, बेंगस्टन वी. एल., बीस वर्षों में अंतर–पीढ़ीगत हिस्सेदारी घटना, इनः सिल्वरस्टीन एम., संपादक। समय और स्थान पर अंतर–पीढ़ीगत संबंधः जेरोन्टोलॉजी और जराचिकित्सा की वार्षिक समीक्षा, न्यूयॉर्क, एनवाईः स्प्रिंगर; 2004. पीपी. 55–76.

10. ग्रिलन सी, वार्नर वी, हिले जे, मेरिकांगस केआर, ब्रूडर जीई, टेनके सीई, वीसमैन एम. एम., अवसाद के लिए उच्च और निम्न जोखिम वाले परिवारः तीन पीढ़ी का चौंकाने वाला अध्ययन, जैविक मनोरोग, 2005; 57:953–960।

11. कौफमैन जी, उहलेनबर्ग पी., वयस्क बच्चों और उनके माता–पिता के बीच संबंधों की गुणवत्ता पर जीवन पाठ्यक्रम संक्रमण के प्रभाव, विवाह और परिवार का जर्नल, 1998; 60:924–938।

12. लेविट एमजे, गुआची एन, वेबर आर. ए., इंटरजेनरेशनल सपोर्ट, रिलेशनशिप क्वालिटी एंड वेल–बीइंगः ए बाइकल्चरल एनालिसिस,परिवार के मुद्दों के जर्नल, 1992; 13:465–481

13. नाशपाती केसी, कैपल्डी डी. एम. दुरुपयोग का अंतर–पीढ़ीगत संचरणः जोखिम वाले नमूने का दो–पीढ़ी का संभावित अध्ययन, बाल शोषण और उपेक्षा, 2001; 25:1439–1461।

14. पिल्मर के., सूटर जे. जे., जीवन–पाठ्यक्रम पर अंतर–पीढ़ी के संबंधों में द्विपक्षीयता, इनः सिल्वरस्टियन एम, गियारुसो आर, बेंग्टसन वीएल, संपादक, समय और स्थान पर अंतर–पीढ़ीगत संबंध, न्यूयॉर्क, एन. वाईः स्प्रिंगर; 2005. पीपी 1–28.

15. पिल्मर के, सूटर जे. जे., मॉक एस. ई, साबिर एम, पार्डो टीबी, सेक्रिस्ट जे. इंटरजेनरेशनल संबंधों की जटिलता को पकड़नाः बाद के जीवन के परिवारों के भीतर द्विपक्षीयता की खोज करना, सामाजिक मुद्दों के जर्नल, 2007; 63:75–791।